सत्प्ररूपणाके आलापान्तर्गत विशेष विषयोंकी सूची

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.	क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
१	प्ररूपणाका स्वरूप और भेद निरूपण	४१३	१५	अयोगिकेवलीकेएक आयुप्राणका समर्थन	४४९
२	प्राणका स्वरूप और प्राणोंका पृथक्निर्देश कथन	४१४	१६	कालाकालाभास द्रव्यलेश्याका स्वरूप	४५१
३	संज्ञाकेभेद और उनका पृथक् निर्देश	४१५	१७	तिर्यंचोंकेअपर्याप्तकालमें क्षायिक और क्षायोपशमिक सम्यक्त्वका समर्थन	४८३
४	उपयोगका स्वरूप और उसका पृथक् निर्देश	४१६	१८	संयतासंयत तिर्यंचोंकेक्षायिक सम्यक्त्वके अभावका कारण	४८४
५	प्ररूपणाओंका सूत्रोक्तत्व-अनुक्तत्व-विचार और भेदाभेद निरूपण	४१७	१९	अयोगिकेवलीकेअनाहारकत्व समर्थन	५०५
६	अपर्याप्तकालमें द्रव्यलेश्या कापोत और शुक्ल ही क्यों होती है, इस बातका विचार	४२५	२०	असंयतसम्यक्त्वी मनुष्यके अपर्याप्त कालमें एक पुरुषवेद तथा भावलेश्याओंकेहोनेका कारण	५१३
७	अपर्याप्त कालमें छहों भावलेश्याओंके होनेका कारण	"	२१	मनुष्यनियोंके आहारक शरीर न होनेका कारण	५१६
८	अपर्याप्त कालमें तीनों सम्यक्त्वोंके होनेका कारण	४३३	२२	देवोंके पर्याप्तकालमें छहों द्रव्य लेश्याओंका समर्थन	५३४
९	भावलेश्याके स्वरूपमें मतभेद और उसका निराकरण	४३५	२३	देवोंके अपर्याप्तकालमें उपशम-सम्यक्त्वका होनेमें हेतु	५६१
१०	अप्रमत्तसंयतके तीन संज्ञाओंके सद्भाव - समर्थन	४३७	२४	अनुदिशादि देवोंके पर्याप्तकालमें उपशमसम्यक्त्वके अभावका विशिष्ट समर्थन	५६८
११	अपूर्वकरण गुणस्थानमें वचनयोग और काययोगके होनेका कारण	४३८	२५	जीवसमासोंके एकसे लगाकर ५७ भेदोंतकका निरूपण	५९३
१२	उपशान्तकषायादि गुणस्थानोंमें शुक्ललेश्या होनेका कारण	४४३	२६	बादर जलकायिक जीवोंके वर्णका विचार	६११
१३	कपाट प्रतर और लोकपूरण समुद्घातगत केवलीके पर्याप्त-अपर्याप्तत्वका	४४४			

	विचार				
१४	भावेन्द्रियका लक्षण और केवलीके उसके अभावका समर्थन	४४७	२७	मनोयोगियोंके वचन और कायप्राणके अस्तित्वका समर्थन	६३०

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.	क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
२८	सयोगिकेवलीके जीवसमासके अस्तित्वका समर्थन	६५५	३४	कार्मणकाययोगी जीवोंके अनाहारकत्वका समर्थन	६७०
२९	औदारिकमिश्रकाययोगी जीवोंकेद्रव्यसे एक कापोतलेश्या अथवा छहों लेश्याएं और भावसे छहों लेश्याओंकेअस्तित्वका प्रतिपादन	६५५	३५	स्त्रीवेदी प्रमत्तसंयतके परिहार-संयमादिके अभावका प्रतिपादन	६८२
३०	औदारिकमिश्रकाययोगि असंयत सम्यग्दृष्टि जीवोंके भावसे छहों लेश्याओंके अस्तित्वका प्रतिपादन	६५८	३६	विविक्षित ज्ञान और दर्शनमार्गणाके आलाप कहनेपर शेष ज्ञान और दर्शनकेनहीं बतानेकेकारण का प्रतिपादन	७२७
३१	औदारिकमिश्रकाययोगी सयोगि- केवलीके आयु और कायबल प्राणोंके अतिरिक्त शेष प्राणोंके अभावका समर्थन	६६०	३७	मन:पर्ययज्ञानके साथ द्वितीयोप-शमसम्यक्त्वकेहोने और प्रथमोप-शमसम्यक्त्वके नहीं होनेका कारण	७२८
३२	औदारिकमिश्रकाययोगी सयोगि- केवलीके केवल एक कापोतलेश्या होनेका समर्थन	६६२	३८	कृष्णलेश्यावाले जीवोंके अपर्याप्त कालमें वेदकसम्यक्त्वके अस्तित्वका प्रतिपादन	
३३	आहारकाययोगी जीवोंके स्त्रीवेद नपुंसकवेद, मन:पर्ययज्ञान और परिहारविशुद्धि संयमके अभावके कारणका प्रतिपादन	६६९	३९	शुक्ललेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके औदारिकमिश्रकाययोगके अभावका प्रतिपादन	७९४
			४०	उपशमसम्यक्तवीके मन:पर्यय ज्ञानकेसद्भाव असद्भावका विचार	८२२
			४१	संयमादि मार्गणाओंमें असंयमादि विपक्षी भावोंकेबतानेका कारण	८२५